गूगल क्लासरूम की आत्मकथा

जन्म हुआ कुछ सालों पहले,
जीमेल, जीमीट करते दोस्ती मुझसे,
शिक्षा में बनी पहचान,
अध्यापिकाएँ हैं पढ़ाती मुझसे।

बच्चे आते, ज्वाइन करते,
सवालों से स्ट्रीम को भरते।
क्लास में असाइन्मेन्टस पाते,
स्कैन करके अपलोड हैं करते।

काम सबमिट नहीं हुआ तो,
दिखाकर मिसिंग डॉट है पाते।
गतिविधियाँ भी सारी स्कूल की,
मेरे प्लेटफोर्म पर ही आतीं।

ऑनलाइन ही मेरा जीवन,
गूगल क्लासरूम है मेरा नाम।
कोरोना जाएगा, मैं भी जाऊँगा,
भविष्य में आऊँगा सबके काम।

-वृतिका गर्ग
कक्षा सप्तम् वर्ग- बी